(IJTBM) 2011, Vol. No. 1, Issue No. 2, Apr-Jun **ISSN: 2231-6868**

ग्रामीण भारत में परंपरागत पैतृक रोजगार की बदलती प्रवृत्तियाँ षहरों की ओर हो रहे पलायन पर एक शोधात्मक अध्ययन

CHANGING TRENDS OF TRADITIONAL MANUAL EMPLOYMENT IN RURAL INDIA: A RESEARCH STUDY ON MIGRATION TO CITIES

डॉ रमेश चंद्र यादव

एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय

वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महोबा

Dr Ramesh Chandra Yadav

Associate Professor, Dept of Commerce,

Veerbhumi Govt PG College, Mahoba

स्न्दर्भ / ABSTRACT

इस प्रकार के और भी अनेक कार्य हो सकते है। गांवों तथा कस्बों में अजीविका के काफी स्त्रोत है, पर सब जगह परिश्रम, बौद्विक षारीरिक कुषलता और जोखिम उठाने की आवष्यकता है थोड़ा सा परिश्रम, कुछ धैर्य तथा व्यापारिक बुद्वि का प्रयोग अजीविका एवं रोजगार के नये नये आयाम प्रदान कर सकता है तथा इस प्रकार के लोंगों को बैंक तथा सरकार भी सहायता प्रदान करते है। वर्तमान ग्रामीण क्षेत्र में मेहनत की रोटी खाने का भाव रखने वालों के लिए आजीविका के स्त्रोतों तथा रोजगार के अवसरों का कोई अभाव नही है। इस प्रकार भारतीय ग्रामीण क्षेत्र में परंपरागत पैतृक रोजगार के संरक्षण के साथ आर्थिक लाभ भी अर्जित किया जा सकता ळें

There can be many more such work. There are many sources of livelihood in villages and towns, but everywhere there is a need for hard work, intellectual, physical skill and risk taking.A little hard work, some patience and practical intelligence, new dimensions of livelihood and employment can be given and the banks and the government also provide assistance to such people. In the present rural area, there is no dearth of sources of livelihood and employment opportunities for the person who wants to eat the bread of hard work. Thus the traditional parental employment in the Indian rural area. Economic benefits can also be earned with protection

IJTBM

(IJTBM) 2011, Vol. No. 1, Issue No. 2, Apr-Jun **ISSN: 2231-6868**

परिचय

जनगणना के अनुसार देष की कुल जनसंख्या 121.02 करोड़ आंकलित की गयी है। जिसमें 68.84 प्रतिषत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है तथा 31.16 प्रतिषत जनसंख्या षहरी क्षेत्रों में निवास करती है। स्वतन्त्र भारत की प्रथम जनगणना 1951 में ग्रामीण तथा षहरी आबादी का अनुपात 83 प्रतिषत तथा 17 प्रतिषत था। 50 वर्श बाद 2001 की जनगणना में ग्रामीण तथा षहरी जनसंख्या का प्रतिषत क्रमष 74 तथा 26 प्रतिषत हो गया। इन आंकड़ों से सुस्पश्ट परिलक्षित होता हे कि भारतीय ग्रामीण लोगों का पलायन तेजी से बढ़ रहा है। गांवों से षहरों की ओर पलायन का सिलसिला कोई नया मसला नहीं है। गांवों में कृशि भूमि के लगातार कम होते जाने, आबादी में निरन्तर वृद्वि होने तथा प्राकृतिक आपदाओं के चलते रोजगार की तलाष में ग्रामीणों को षहरों की ओर रूख करना पड़ा है।

परम्परागत रूप से भारतीय गांव में कृशि तथा पैतृक रोजगार ही जीविका के साधन रहे है। ऐसे में विकास की दौड़ में कुछ प्राचीन विरासतें विलुप्त न हो पायें इस पर ध्यान देना जरूरी है। आज जरूरत इस बात की है कि ग्रामीण युवाओं को नये रोजगार के साथ साथ उनके पैतृक व्यवसाय से जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाये अन्यथा कई पारम्पारिक धन्धे केवल किताबों में देखने की चीज बनकर रह जायेगें। आज आवष्यकता इस बात की है कि गांवों की युवा पीढ़ी गांवों तथा कस्बों में रहकर ही बदलती हुई स्थितियों तथा आवष्यकताओं के अनुसार नई तकनीकी अपनाकर इन्हें नया स्वरूप दें। इस प्रकार गांवों की संस्कृति में बसे पैतृक धन्धों को जीवित रखा जा सकता हैं साथ ही ग्रामीण भारत से षहरों की ओर हो रहे बेलगाम पलायन पर भी काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

यह कटु सत्य है कि देष में इतनी वैज्ञानिक प्रगति के उपरान्त भी ग्रामीण भारत में बेरोजगारी की समस्या दिन प्रतिदिन गम्भीर होती जा रही है, जो कि देष के आर्थिक तथा सामाजिक ताने बाने के लिए खतरा बनती जा रही है। देष में एक ओर तो अर्थ विविधता बढ़ रही है, षिक्षा बढ़ रही है साथ ही दूसरी तरफ बेरोजगारी भी बढ़ती जा रही है। नई पीढ़ी के अधिकांष ग्रामीण युवाओं का मन श्रम प्रधान कार्यो से उचट जाता है। किन्तु अनेक नौजवान जो प्रतिभावान है, श्रम के प्रति जिनके मन में निश्ठा है उनके लिए ग्रामीण भारत में आज भी अच्छे स्वरोजगार अवसरों की कमी नहीं हैं। यदि ग्रामीण युवक नौकरी की मानसिकता से मिलकर मन में उघमिता का भाव जगाये तो उनके समक्ष उन्हीं के परिवेष में रोजगार के अवसरों का अभाव नहीं है।

(IJTBM) 2011, Vol. No. 1, Issue No. 2, Apr-Jun **ISSN: 2231-6868**

परंपरागत पैतृक रोजगार :–

वस्तुत पैतृक रोजगार ग्रमीण अर्थव्यवस्था रूपी माला में गुथे हुए मणियों की भांति थें जिसका आधार स्तम्भ खेती था। इन परंपरागत धंधों में विखराव की वजह से आज यह माला छिन्न भिन्न हो चुकी है। परिणामस्वरूप कृशि व्यवस्था के साथ साथ समस्त ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था प्रभावित हुयी है। गांमीण धंधे होते हुये भी गांवों को कोई लाभ नहीं मिल रहा है। ग्रामीण परिवेष में मौजूद गरीबी व बेरोजगारी के वैसे तो अनेक कारण हो सकते है परन्तु इनमें से एक महत्वपूर्ण कारण गांवों के परंपरागत उघोग धंधों में कमी होना है, वे धंधे की लगभग एक चौथाई जनसंख्या का जीवनाधार है। वे ग्रमीण अर्थव्यवस्था को सन्तुलित रूप प्रदान करने में सहयोग देते थे। गांवों में उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं में पारिवारिक व्यवसाय के रूप में हजारों वर्शों से कार्य हो रहा था। इसके अनेक लाभ भी थे। इस लिए आज भी नयी पीढ़ी का सेवा व्यवसाय में कार्यरत रहना व्यवहारिक एंव लाभदायक है। इस प्रकार के व्यवसायों के कुछ उदाहरण है गुथारी, लोहारी, कताई बुनाई, हेयर कंटिग, कुम्हारी, रंगाई पुताई, छपाई, सिलाई, सुनारी, बागवानी, जूता निर्माण, मूर्तियां बनाना, दीवारों पर मांडणे बनाना, चुनाई, कमठाने का कार्य आदि प्रमुख है।

जब पैतृक धन्धे पीढ़ी दर पीढ़ी चलते थे तो सम्बन्धित परिवार के युवा वर्ग का रोजगार की तलाष में इधर उधर भटकने की आवष्यकता नहीं थी। लेकिन युवक आज इन धन्धों को सीखने में हीनता का अनुभव करने लगे है और उन्हें अपने पैतृक व्यवसाय तथा कार्यों से विरक्ति होती जा रही है। परिणामस्वरूप युवा वर्ग रोजगार की तलाष में षहरों की ओर भाग रहा है जबकि कस्बों व षहरों में जाकर भी उन्हें इसी प्रकार के सेवा कार्यों को अपनाना पड़ता है जहां आजीविका अर्जित करने हेतु कई अन्य समस्याओं से भी जूझना पड़ता है।

अत आज आवष्यकता इस बात की है कि युवक गांवों व कस्बों में ही रहकर इन धंधों में बदलती हुई स्थितियों तथा आवष्यकता के अनुसार नई तकनीके अपनाकर इन्हें नया स्वरूप दें। इन कौषलों में दक्षता पाने के लिए आजकल प्रषिक्षण की व्यवस्था भी है परन्तु अधिकांष धंधों में गांवों एंव कस्बों में कार्यरत कारीगर के सानिध्य में रकर ट्रेनिंग प्राप्त की जा सकती हैं। यदि युवा अपने पैतृक व्यवसाय से जुड़े तो कुछ हद तक बेरोजगारी की समस्या पर काबू पाया जा सकता हैं।

IJTBM

(IJTBM) 2011, Vol. No. 1, Issue No. 2, Apr-Jun **ISSN: 2231-6868**

गांवों में सेवा रोजगार का बदलता स्वरूप :–

वस्तुत ग्रामीण हस्तषिल्पों के विकास के लिए अनेक क्षेत्र विद्यमान है इसलिए इसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए। परंपरागत घरेलू धंधों द्वारा केवल उन उपभोक्ता वस्तुओं को ही बनाना चाहिए जिनकी आवष्यकता केवल गांवों में ही हो बल्कि ऐसी वस्तुओं का निर्माण भी किया जाना चाहिए जिनकी जरूरत षहरों में भी रहती है। यह तभी सम्भव है जबकि आधुनिक वित्त सुविधाएं, निर्मित वस्तुओं की विक्रय सुविधाऐं बढ़ाई जायें। साथ ही ग्रामीण परंपरागत धंधों को पुनर्जीवित किया जाये। इसके लिए नवीन प्रौद्यौगिकी आधारित रोजगार एंव उनमें नवीन तकनीकों को सेवा व्यवसाय का आधार बनाया जा सकता है। आजकल कई नवीन सेवाओं की जरूरत गांवों व कस्बों में भी बढ़ी है।

नवीन तकनीकों के आ जाने से अनेक सेवाओं का विस्तार भी हुआ है। आजकल नवीन तकनीकी पर आधारित सेवाओं को बेहतर ढंग से संचालित करने के लिए अनेक उपकरण बाजार में आ गये हे। जिनके बारे में जानकारी बढ़ाने की आवष्यकता है। विजली से चलने वाली अनेक मषीनें काम को अच्छा तथा त्वरित गति से करती है यदि कोई व्यक्ति इनमें से किसी कार्य को करना चाहे तो थोड़े समय तक किसी प्रषिक्षित व्यक्ति के साथ कार्य करने का अनुभव करना चाहिए। इस प्रकार कार्य करके कुषलता, ग्राहक की आवष्यकता तथा उसके संतोश का व्यवहारिक अनुभव प्राप्त हो जाता है । इस प्रकार की ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित होने वाली कुछ नवीन सेवाओं की जानकारी निम्नांकित प्रस्तुत की जा रही है

सूचना प्रोघोगिकी :–

आजकल संचार सेवा में काफी विस्तार हुआ है। गांवों गांवों में टेलीफोन सेवा पँहुचने लगी हैं। एस0 टी0 डी0, पीसीओ लगाकर रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए थोड़ी पूंजी एंव स्थान की जरूरत होती है।

फोटोकॉपी :–

यह एक ऐसी तकनीक है जिसकी सहायता से किसी भी दस्तावेज की हूबहू नकल तत्काल प्राप्त की जा सकती है। इसमें खर्चा भी कम लगता हैं ।यदि कोई व्यक्ति लगभग 50000 रूपये व्यय करे तो यह रोजगार के लिए अच्छा साधन बन सकती है। इस कार्य के लिए बिजली एंव थोड़ी सी जगह की जरूरत रहेगी।

IJTBM

ब्यूटी पार्लर :–

लोगों की हमेषा यह इप्छा रहती है कि वह खूबसूरत दिखाई दे इसके लिए ब्यूटी पार्लर चलाकर अच्छी आमंदनी की जा सकती है। यह कार्य अपने घरों में भी किया जा सकता है। थोड़े समय के प्रषिक्षण की जरूरत रहेगी।

वीडियो षूटिंग एंव फोटोग्राफी :–

आजकल दस्तावेज, प्रवेष फार्म, नौकरी हेतु आवेदन पत्र पर फोटो लगाने की जरूरत रहती है। विवाह समारोह में भी वीडियो षूटिंग एंव फोटोग्राफी की जाती है। यदि गांवों में फोटोग्राफी का व्यवसाय किया जाये तो बहुत ही कम खर्चे पर रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

स्कीन प्रिटिंग :–

अनेक अवसरों पर आमंत्रण निमंत्रण पत्र, इस्तिहार, पोस्टर आदि छपवाने होते है। गांवों में बड़े प्रेस मषीन नही होते है। स्कीन प्रिटिंग द्वारा रंगीन छपाई की जा सकती है। इस व्यवसाय में मात्र 10 हजार रूपये का खर्चा होता है परन्तु आमंदनी ठीकठाक हो जाती है।

बिजली फिटिंग :–

गांवों में बिजली पँहुच जाने से घरों, कारखानों, दुकानों आदि में बिजली फिट्रिग का काम करना होता है। एक बार फिटिंग हो जाने के बाद भी उसमें खराबियां आ जाने से सेवा की जरूरत रहती है। मामूली खर्चे से औजार खरीदकर इस कार्य को आरम्भ किया जा सकता है। किसी जानकार व्यक्ति के साथ 1ढ़2 माह रहकर काम सीखा जा सकता है।

फर्नीचर निर्माण व मरम्मत :–

आजकल लोगों के पास लकड़ी, लोहे आदि की अनेक वस्तुएं रहती है।लोग उन्हें समय समय पर बदलते रहते है। इस क्षेत्र में रोजगार की बहुत सम्भावना है। परंपरागत औजारों के साथ ही बिजली से चलने वाले कई नये औजार आ गये है। उनके उपयोग से काम अच्छा एंव जल्दी होता है। इस क्षेत्र में भी स्वरोजगार के द्वारा अच्छी आय अर्जित की जा सकती है।

IJTBM

(IJTBM) 2011, Vol. No. 1, Issue No. 2, Apr-Jun **ISSN: 2231-6868**

षिक्षण कार्य :–

षिक्षा के प्रति जागृति के साथ ही लोग अपने बच्चों को अच्छी षिक्षा दिलाने के लिए प्रयत्न करते रहते है। अत अच्छा विद्यालय, वालवाड़ी अग्रेजी माध्यम से स्कूल चलाकर परिवार के दो दृ चार लोगों को कार्य मिल सकता है।

पालनाघर (केष) :–

आजकल महिलाएं भी रोजगार करने लगी है। उन्हें रोजगार पर जाने के समय छोटे छोटे बच्चों को कहीं न कहीं छोड़कर जाना पड़ता है। यदि आप चाहें तो अपने घर में ही बच्चों को रखने की व्यवस्था कर सकते है। पालने, झूले, खिलौने के लिए दो दृ चार हजार रूपये खर्च करके एक अच्छा पालनाघर (केष) चला सकते है। इससे नियमित मासिक आय होती रहेगी।

वाहन रिपेयर :–

आजकल गांवों व कस्बों में भी अनेक व्यक्तियों के पास साइकिल, मोटरसाइकिल, स्कूटर, जीप आदि वाहन रहते है। समय समय पर उनकी दुरूस्ती भी करवानी पड़ती है। अत इस क्षेत्र में थोड़ी जानकारियों के बाद कुषलता प्राप्त कर वाहन रिपेयर का कार्य गांव में किया जा सकता है।

टाईपिंग, कम्प्यूटर तथा साइबर कैफे :–

कम्प्यूटर की पंहुच गांवों में भी होने लगी है। इसकी सहायता से दस्तावेज तैयार करने, मुद्रण हेतु सामग्री , समाचार भेजने व प्राप्त करने हेतु ई मेल आदि की सुविधाएं प्राप्त कर सकते है। इस क्षेत्र में विस्तार एंव कार्य की बहुत सम्भावनाएं है।

मोबाइल द्वारा रोजगार :–

मोबाइल का प्रचलन तेजी से बढ़ने से इस क्षेत्र में भी रोजगार की संभावनाएं बढ़ रही है। वर्तमान में षहरों में ही नही गांवों में भी इसका कारोबार काफी तेजी से बढ़ा है। षहरी क्षेत्र में जहाँ मोबाइल खराब होने पर लोग नये सेट खरीदना पसन्द करते है लेकिन गांवों में ऐसी स्थिति नहीं है वहां मोबाइल खराब होने पर उसकी मरम्मत कराना अच्छा समझते है। यही वजह है कि मोबाइल मेन्टेनेन्स की दुकानें षहरों की अपेक्षा गांव में ज्यादा है।

IJTBM

(IJTBM) 2011, Vol. No. 1, Issue No. 2, Apr-Jun ISSN: 2231-6868

चिकित्सा कार्य :–

अनेक गांवों में चिकित्सा की सुविधाएं अभी तक भी नहीं पंहुची है। वहां पर लोगो की मदद के लिए चिकित्सा सुविधाएं बढ़ाने की जरूरत है। अज दाई, नर्स आदि का प्रषिक्षण प्राप्त कर रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

ड्राईक्लीन एवं लांड्री का कार्य :–

लोग आजकल मंहगे कपड़े पहनते है। गर्म कपड़े भी पहनते है। उनको साधारणतया पानी से धोने पर कपड़ा खराब हो जाता है। इसलिए लांड्री का काम किया जाये तो इसमें 2द्4 लोगो को रोजगार मिल सकता है।

सेनेट्री का कार्य :–

गांवों में भी जगह जगह पानी की टंकिया व नल लग जाने से लोग घरों में नल की फिटिंग कराते है। हाथ धोने एवं मलमूत्र त्यागने के लिए बेसिन व डब्ल्यूसी आदि लगने लगे है। इसकी फिटिंग का बहुत कार्य होता है। उनमें दुरूस्ती आदि का भी कार्य रहता है। जानकार तथा अनुभवी सेनेट्री फिटर के साथ कुछ दिनों तक कार्य को सीखकर इसे रोजगार के रूप में अपनाया जा सकता है।

वेल्डिंग का कार्य :–

खिड़कियों व किबाड़ में जाली आदि लगाई जाती है। यह लोहे के तारों एवं पत्तियों से बनती है। इसमें वेल्डिंग का काफी कार्य होता है। वेल्डिंग में गैस सिलेण्डर एवं कुछ साधारण औजारों की आवष्यकता रहती है। इस कार्य से अनेक प्रकार की मषीनों में टूट फूट को भी दुरूस्त किया जाता है। गांव में ही थोड़ी जगह में षेड बनाकर इस व्यवसाय को किया जा सकता है।

उपकरण रिपेयर :–

रेडियो, टी0 वी0, घड़ी, पंखे, प्रेषर कुकर, बिजली से चलने वाले अन्य उपकरण जैसेद्र इस्त्री, मिक्सी, वॉषिगं मषीन,आटा चक्की, ग्राइण्डर मोटर आदि उपकरण घरों में काम आते है। उनमें समय समय पर खराबियां आ जाने से उन्हे दुरूस्त करना होता है। कुछ समय के लिए किसी दुकान पर कार्य कर लिया जाये जहां इस प्रकार के कार्य होते है तो इस क्षेत्र में काफी रोजगार की सम्भावनाएं है।

IJTBM

पारम्परिक सेवा रोजगार के फायदे :–

- ❖ *सेवा रोजगार में अधिक पूंजी की जरूरत नही रहती है।*
- ❖ *ग्राम में रकर ही आसपास की जगहों में कार्य मिल जाता है।*
- ❖ *सेवा कार्यों को सीखना कठिन नहीं रहता है।*
- ❖ *अपने पैतृक सेवा कार्य को अपनाया जा सकता है।*
- ❖ *पैतृक सेवा कार्य को सीखना एंव करना सरल रहता है।*
- ❖ *सेवा कार्यो के साथ घर एवं खेतीवाड़ी का काम भी किया जा सकता है*
- ❖ *सेवा कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी परिवार में आगे बढ़ाये जा सकते है।*
- ❖ *अपने घर से ही सेवा कार्यो को संचालित किया जा सकता है।*
- ❖ *दुकान एवं जमीन आदि की जरूरत नहीं रहती है।*
- ❖ *सेवा रोजगार में परिवार के सदस्यों का सहयोग भी मिल सकता हैं।*
- ❖ *दुकान एवं जमीन आदि की जरूरत नहीं होती है।*
- ❖ *सेवा रोजगार में परिवार के सदस्यों का सहयोग भी मिल जाता है।*
- ❖ *कार्य करने का समय अपनी सुविधानुसार निर्धारित किया जा सकता है।*
- ❖ *षहर में आने जाने, रहने का खर्चा नहीं लगता है। समय व श्रम की बचत होती है।*
- ❖ *पीढ़ी दर पीढ़ी कार्य करते रहने से सेवा में निहित कौषल विकसित होता रहता है।*

इस प्रकार के और भी अनेक कार्य हो सकते है। गांवों तथा कस्बों में अजीविका के काफी स्त्रोत है, पर सब जगह परिश्रम, बौद्विक षारीरिक कुषलता और जोखिम उठाने की आवष्यकता है थोड़ा सा परिश्रम, कुछ धैर्य तथा व्यापारिक बुद्वि का प्रयोग अजीविका एवं रोजगार के नये नये आयाम प्रदान कर सकता है तथा इस प्रकार के लोंगों कां बैंक तथा सरकार भी सहायता प्रदान करते है। वर्तमान ग्रामीण क्षेत्र में मेहनत की रोटी खाने का भाव रखने वालों के लिए आजीविका के स्त्रोतों तथा रोजगार के अवसरों का कोई अभाव नही है। इस प्रकार भारतीय ग्रामीण क्षेत्र में परंपरागत पैतृक रोजगार के संरक्षण के साथ आर्थिक लाभ भी अर्जित किया जा सकता है।

IJTBM

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पापोटा, टी.एस. (2010) रोजगार वृद्धि – सुधार के बाद की अवधि आईएसटीडी वर्किंग पेपर 2012 07 औद्योगिक विकास में अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली।

2. रंगरापन.सी, आई.के. पद्मा और सीमा (2011) कहां है लापता श्रम बल ? आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक खंड 46 नंबर 39

3. जाटव मनोज और सुचित्रा सेन (2010) ष्ग्रामीण भारत में गैर फॉर्म रोजगार के ड्राइवरष् 2009–10 नासा दौर से साक्ष्यष् आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड स्ट संख्या 26 और 27 पीआर 14–21

4. हिमांशु (2011) भारत में रोजगार के रुझान एक पुन परीक्षा आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 46 (37)

5. भारत सरकार (2010) भारत में रोजगार और बेरोजगारी की स्थिति एनएसएस 68वें दौर सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, नई दिल्ली।

REFERENCES

1. Papota, T.S. (2010), Employment Growth: Post Recovery Period SITD Working Paper 2012 07, Institute of Studies in Industrial Development, New Delhi
2. Rangrapan C., I K Padma, Seema (2011), Where is the Missing Labour Force? Economic and Political Weekly, Section 46, No. 39
3. Jatav Manoj & Suchitra Sen (2010), Drivers of Non Farm Employment of Rural India 2009-10, Witness from NASA Era, Economic and Political Weekly, Section No: 26 & 27 PR: 14-21
4. Himanshu (2011), Employment Trends in India: A Re-Examination Economic and Political Weekly, 46(37)
5. Government of India (2010), Status of Employment and Unemployment in India, NSS(68), Ministry of Statistics and Program Affairs, New Delhi

IJTBM